उत्तर का मैदानी क्षेत्र

- प्रायद्वीपीय पठार और हिमालय के बीच उत्तर का विशाल मैदान अवस्थित है।
- यह उत्तर में हिमालय, द० में विंध्याचल, पू० पूर्वांचल हिमालय, प० में किरथर व सुलेमान से घिरा है।
- क्षेत्रफल 7.5 लाख वर्ग किमी०
- भारतीय क्षेत्र में इसकी ल० = 2400 km. प० में चौ० - 500 km. पूरब में चौ० - 150 km.
- औसत ऊँचाई 200 m से कम, WB में 25 मी० से भी कम।

✓ इस मैदान का निर्माण सिंधु और उसके सहायक नदियाँ, गंगा - यमुना - ब्रह्मपुत्र और उसके सहायक नदियों के द्वारा लायी गई मलवा के निक्षेपण से हुआ है।

भौगोलिक इकाई

1. सिंधु - सतलज का मैदान
2. थार मरुस्थलीय क्षेत्र
3. ब्रह्मपुत्र का मैदान
4. गंगा - यमुना का मैदान

1. सिंधु-सतलज का मैदान

- इसे पंजाब का मैदान भी कहा जाता है।
- इस मैदान का निर्माण सिंधु और उसके सहायक नदियों के द्वारा लायी गई मलवा के निक्षेपण से
- इसका निर्माण प्लीस्टोसीन कल्प में हुआ
- इस मैदान का विस्तार भारत के पंजाब, हरियाणा व उत्तरी राजस्थान में हुआ है।
- औसत ऊँचाई 200 m से कम
- इस क्षेत्र में कहीं - कहीं शुष्क नदियाँ और शुष्क क्षारीय झील पायी जाती हैं जिसे स्थानीय भाषा में धाँड कहा जाता है।
- कई नदी दोआब का विकास
  - (a) बिस्त दोआब - व्यास + सतलज
  - (b) बारी " - व्यास + रावी
  - (c) रचना " - रावी + चेनाब
  - (d) चाज " - चेनाब + झेलम
  - (e) सिंधुसागर " - सिंधु + चिनाब + झेलम.
- ढाल - उ० पू० से द० प० की ओर.
- सिंधु की सहायक नदियाँ शिवालिक को कई जगहों पर काट डाली है इस कटे भाग को स्थानीय भाषा में चो कहते हैं।

2. थार मरुस्थल

- भारत के विशाल मैदान का ही एक भाग थार मरुस्थल है।
- विस्तार - भारत और पाकिस्तान के सीमावर्ती क्षेत्र में.
- ✓ लम्बाई 640 km, चौ० - 160 km.
- अरावली पर्वत के द० प० से उ० पू० स्थिति के कारण यह प्रदेश शुष्क प्रदेश में बदल चुका है

- ढाल द० प० की ओर है।

- थार मरुस्थलीय क्षेत्र मिसोजोइक महाकल्प तक अरब सागर में डूबा हुआ था।
- होलोसीन कल्प के प्रारंभ में कुछ भूसंचलन के कारण अरब सागर का उत्तरी भाग ऊपर उठ गया और द० भाग धँस गया।
- आज भी इस क्षेत्र में खारे पानी का कई झील मिलता है — साँभर झील, डिडवाना झील, उदयपुर का पिछोला झील।
- शुष्क प्रदेश होने के कारण चट्टानों के अपक्षरण से बड़े पैमाने पर बालू का निक्षेप हुआ है।
- इस क्षेत्र में बरखान, धोरा, बालुका स्तूप — मरु० स्थलाकृतियाँ

2. ब्रह्मपुत्र का मैदान

- इसका विस्तार भारत के उ०पू० भाग में — उ० में हिमालय, द० में गारो, खासी, जयंतिया की पहाड़ी, पूरब में पटकोई बुम और प० में तीस्ता नदी के मध्य हुआ है।
- इसे असम का मैदान भी कहा जाता है।
- इस मैदान का निर्माण ब्रह्मपुत्र एवं उसके उसके सहायक नदियों और तीस्ता नदी के द्वारा लायी गई मलवा के निक्षेपण से हुआ है।
- यह मैदान मूलतः रैम्प घाटी में अवस्थित है।
- यह भारत का बाढ़ प्रभावित क्षेत्र है।
- ढाल पूरब से प०, बांग्लादेश में उ० से द०
- औसत ऊँचाई 50–200m.
- ब्रह्मपुत्र नदी — विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप — माजुली का निर्माण

3. गंगा-यमुना का मैदान

- विस्तार - भारत के उत्तरी भाग में उ० में हिमालय, द० विंध्याचल, पू० में राजमहल की पहाड़ी व प० में अरावली की पहाड़ी के मध्य स्थित।
- हिमालय और प्रायद्वीपीय पठार से निकलने वाली कई नदियाँ गंगा नदी तंत्र का अंग बनती हैं।
- सामान्य ढाल प० से पूरब।
- औसत ऊँचाई — 0–300m.
- गंगा नदी इस मैदान को दो भागों में बाँटती है

(i) उत्तरी गंगा का मैदान — सामान्य ढाल दक्षिण की ओर

(a) रोहिलखंड का मैदान

(b) अवध का मैदान

(c) गोरखपुर-देवरिया का मैदान

(d) मिथिलांचल का मैदान.

(ii) दक्षिणी गंगा का मैदान — ढाल उत्तर की ओर

(a) बुंदेलखंड का मैदान

(b) इलाहाबाद का मैदान

(c) भोजपुर का मैदान

(d) मगध का मैदान

(e) अंग का मैदान

संरचनात्मक दृष्टि से गंगा-यमुना के मैदान को चार भागों में बाँटा जाता है।

1. भाबर
2. तराई
3. बांगर
4. खादर

1. भाबर :- भाबर का विस्तार शिवालिक पर्वत के दक्षिण में हुआ है।

- यह प० में पोरबार पहार से तिस्ता नदी तक विस्तृत है।
- चौड़ाई 8-16 km.
- औसत ऊँचाई — 150-250मी०.

उत्पत्ति

- इसका निर्माण हिमालय से निकलने वाली नदियों के द्वारा लायी गई बोल्डर क्ले के निक्षेपण से हुआ है।

विशेषता

1. इसका निर्माण बोल्डर-क्ले से हुआ है
2. इसका निर्माण शिवालिक के पदस्थली में हुआ है।
3. हिमालय से निकलने वाली नदियाँ इस क्षेत्र में आकर विलुप्त हो जाती हैं जिससे खंडित नदी प्रवाह का विकास होता है।
4. जलजमाव वाले क्षेत्रों में दलदली भूमि का विकास हुआ है
5. इस क्षेत्र में कई जलोढ़ पंख एवं जलोढ़ शंकु पाये जाते हैं।
6. यह पर्वत और मैदान के बीच संक्रमण पेटी है।
7. यह प्रदेश पथरीले धरातल न होकर दीर्घकाल तक निक्षेपण के कारण मिट्टी के आवरण से ढँक गया है यद्यपि उसके नीचे पत्थर के टुकड़े हैं।

2. तराई :- भाबर के दक्षिण में तराई प्रदेश का विकास हुआ है।

- इसका निर्माण नमीयुक्त चिपचिपी मिट्टी के निक्षेपण से हुआ है।
- औसत ऊँचाई 150-200 m., चौड़ाई 15-30 km.

विशेषता

1. यह अत्यधिक नमी क्षेत्र है जहाँ पर्याप्त मात्रा में वर्षा होती है।
2. यह घने जंगलों से ढँका हुआ है।
3. कहीं-कहीं दलदली भूमि का विकास हुआ है।
4. भाबर प्रदेश के विलुप्त नदियाँ यहाँ धरातल पर पुनः दिखाई देती हैं

5. आर्द्र वातावरण के कारण यह मलेरिया के लिए प्रसिद्ध
6. इस प्रदेश में मुजफ्फरपुर से मुजफ्फरनगर तक विश्व प्रसिद्ध गन्ना पेटी स्थित
7. थारू जनजाति का निवास क्षेत्र.
8. इसका निर्माण बारीक कँकड़ पत्थर, रेत और चिकनी मिट्टी से हुई है
इसको साफ करके धीरे-धीरे खेती के अंतर्गत लाया जा रहा है।

3. बांगर :- इसे पुरानी जलोढ़ मिट्टी के नाम से जाना जाता है।
- यह मैदान का ऊँचा भाग है, जहाँ सामान्य रूप से नदियों की बाढ़ का पानी नहीं पहुँच पाता है।
- औसत ऊँचाई 100-150m.
- इसका विस्तार उत्तरी और द० गंगा मैदान में हुआ है।
- यहाँ पुरानी काँप मिट्टियाँ पायी जाती हैं जिसका निर्माण काल मध्य से अपर प्लीस्टोसीन युग के बीच माना जाता है।
- इसका रंग हरा है तथा कँकड़ पत्थर भी मिलते हैं।
- सतलज का मैदान तथा गंगा का ऊपरी मैदान में बांगर की अधिकता है
- मुरादाबाद के पास बालु के बड़े-बड़े टीले मिलते हैं जिसे भूर कहा जाता है।
- प० बंगाल में बांगर के साथ-साथ लैटेराइट मिट्टी से युक्त मैदान को बारिंद कहा जाता है।
- बांगर प्रदेश भारत के खाद्यान्न फसल पेटी के रूप में प्रसिद्ध है।

4. खादर :- इसे नवीन जलोढ़ मिट्टी कहते हैं।
- इसका निर्माण नदियों के द्वारा लायी गई महीन और चिकनी मिट्टी के निक्षेपण से हुआ है।
- इस प्रदेश में नदियों के बाढ़ का पानी प्रतिवर्ष पहुँचता है इसे बाढ़ का मैदान या कछारी प्रदेश भी कहते हैं।
- प्रतिवर्ष बाढ़ के पानी से यहाँ की मिट्टी नवीन होती रहती है।
- यह बालु व कँकड़ से युक्त है तथा भूमिगत जल का उत्तम संग्राहक है।
- इसकी उर्वरा शक्ति में प्रतिवर्ष वृद्धि होती है
- यह अपर प्लीस्टोसीन युग से लेकर आधुनिक काल का है।
- नदियों के मुहाने पर खादर के निक्षेपण से डेल्टा का निर्माण हुआ है।
- पंजाब में इसे बेट भूमि कहा जाता है।

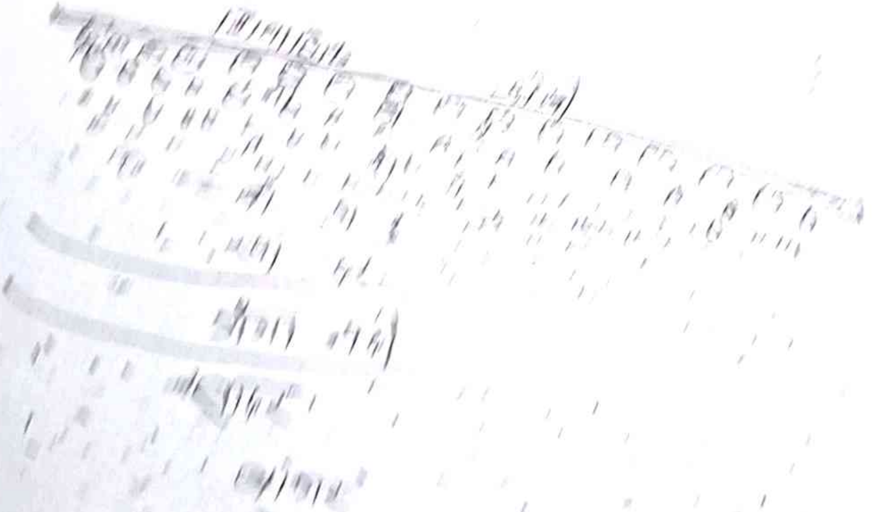

गंगा का मैदान

- क्षेत्रफल — 3.57 लाख वर्ग km.
- जलोढ़ मिट्टी की गहराई 2000 m. तक।
- उत्पत्ति — रिफ्ट घाटी में मलवा निक्षेपण से।

प्रादेशिक विभाजन

1. ऊपरी गंगा का मैदान
2. मध्य " "
3. निम्न " "

1. ऊपरी गंगा का मैदान

- विस्तार — प० से अरावली से पू० में इलाहाबाद तक।
- इस मैदान में उत्तर से द० गंगा और यमुना नदी प्रवाहित होती है। द० से उत्तर की ओर चम्बल नदी।
- इस मैदान के उत्तर में भाबर, तराई, बांगर जैसी संरचनाएँ मिलती हैं जबकि द० की ओर उत्खात भूमि का निर्माण हुआ है।
- यह क्षेत्र प० उत्तरप्रदेश का भाग है।
- उपजाऊ मिट्टी का क्षेत्र होने के कारण — अन्न भंडार के रूप में प्रसिद्ध
- गंगा-यमुना दोआब नदियों से कृषि के लिए प्रसिद्ध रहे हैं।
- औसत ऊँचाई = 100–300 मी०
- यमुना, गंगा, रामगंगा, शारदा, गोमती, घाघरा - प्रमुख नदी

2. मध्य गंगा का मैदान

- विस्तार — इलाहाबाद से राजमहल पहाड़ी तक
- बिहार और पूर्वी उत्तरप्रदेश में विस्तार है।
- औसत ऊँचाई 50–100 m.
- इस क्षेत्र में नदियाँ मोड़ लेकर प्रवाहित होती हैं, जिसके कारण नदियों के किनारे गोखुर झील व बाढ़ का मैदान का निर्माण।
- जगह-जगह दियारा क्षेत्र का विकास हुआ है।
- पटना सिटी के पास जल्ला क्षेत्र का विकास, बाढ़ से मोकामा के बीच टाल क्षेत्र का विकास
- कोसी, बागमती, गंडक — मार्ग बदलने के लिए प्रसिद्ध, इन नदियों के पुराने मार्ग को चौर कहते हैं। चौर में लोग मछली और तालमखाना की खेती करते हैं।
- यहाँ खादर भूमि की अधिकता है
- यह मैदान कृषि के लिए प्रसिद्ध है
  - नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्र में धान की खेती

• तराई क्षेत्र में गन्ना की खेती
• गंगा नदी के अरी किनारे पर - केला, परवल, तरबूज, खीरा, ककड़ी
• पूर्णिया, कटिहार, किशनगंज में जूट.
• द० गंगा मैदान में - गेहूँ, धान, तेलहन, दलहन, सब्जी.
• इस क्षेत्र में बरौनी एक मात्र औद्योगिक नगर है।

3. निम्न गंगा का मैदान

- विस्तार - राजमहलपहाड़ी से गंगा - ब्रह्मपुत्र डेल्टा तक
- मैदान का ढाल उत्तर से दक्षिण
- यह मूलतः प. बंगाल और बांग्लादेश में अवस्थित है।
- इसका निर्माण प्लीस्टोसीन कल्प में
- औसत ऊँचाई 50 m.
- इस मैदान का ऊपरी भाग बारेंद्र कहा जाता है, द० भाग में डेल्टा का नि
- इस मैदान में विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा - गंगा-ब्रह्मपुत्र का डेल्टा
  इसका निर्माण खादर मिट्टी से हुआ है।
- इस क्षेत्र में नदियाँ कई शिरिकाओं में बंटकर सागर में गिरती है।
- समुद्री ज्वार के कारण डेल्टाई भाग में ~~...~~ दलदली भूमि का विकास
- आर्थिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण
• डेल्टाई क्षेत्र मैंग्रोव वनस्पति - वन, सुंदरी वृक्ष
• हुगली नदी घाटी — जूट उत्पादन + चावल
• दार्जिलिंग — चाय + बाँस